

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 8, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 3, जुर्गन मोल्टमैन, कैथोलिक और प्रोसेस्ड थियोलॉजी

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और क्राइस्टोलॉजी पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 3, जुर्गन मोल्टमैन, कैथोलिक और प्रक्रिया धर्मशास्त्र है। हम जुर्गन

मोल्टमैन के साथ आधुनिक क्राइस्टोलॉजी का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

इसी तरह की विचारधारा, लेकिन ईश्वर के सिद्धांत के लिए कहीं अधिक बड़े परिणामों की ओर ले जाने वाली, एक अन्य पोस्ट-बार्थियन क्रिस्टोलॉजिकल परियोजना में पाई जाती है, जो जुर्गन मोल्टमैन की है। मोल्टमैन हमें बताता है कि उसका धर्मशास्त्र क्रॉस के धर्मशास्त्र में उसकी रुचि है, जो द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद के वर्षों में वापस जाता है जब वह और उसकी पीढ़ी के अन्य बचे हुए लोग शिविरों और अस्पतालों से व्याख्यान कक्ष में वापस आ गए थे। उस स्थिति में, उद्धरण, एक धर्मशास्त्र जो ईश्वर की बात नहीं करता है, उस व्यक्ति की दृष्टि में जिसे त्याग दिया गया था और क्रूस पर चढ़ाया गया था, उसके पास हमें बताने के लिए कुछ भी नहीं होगा, उद्धरण बंद करें।

यह उनकी पुस्तक, द क्रूसीफाइड गॉड से है। बेशक, मार्टिन लूथर के पास पहले मध्ययुगीन रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्रों के खिलाफ क्रॉस का धर्मशास्त्र था, जिसे उन्होंने महिमा के धर्मशास्त्र कहा था, जो सिर्फ भगवान की उपस्थिति में मार्च करने और उनके बारे में सब कुछ जानने का दावा करते थे। इसके बजाय, लूथर ने कहा, नहीं, सच्चा धर्मशास्त्र क्रॉस का धर्मशास्त्र है, हमारे पापों के लिए क्रूस पर मसीह का दुख।

यह अपमान, दीनता और पीड़ा आदि का धर्मशास्त्र है। क्रॉस का नया क्राइस्टोलॉजी और क्रॉस का नया धर्मशास्त्र मोल्टमैन द्वारा पीड़ित और मरती हुई मानवता की हताश चीखों का जवाब देने के लिए विकसित किया गया है। क्रॉस के धर्मशास्त्र का ज्ञानमीमांसा सिद्धांत केवल यह द्वंद्वात्मक सिद्धांत हो सकता है।

ईश्वर का ईश्वरत्व क्रॉस के विरोधाभास में प्रकट होता है। मोल्टमैन, क्षमा करें, इसे एक द्वंद्वात्मक सिद्धांत में विकसित करता है जो उसके पूरे धर्मशास्त्र को नियंत्रित करता है और मुक्ति के एक नए ईसाई व्यवहार की ओर ले जाता है। मोल्टमैन के लिए क्रॉस का क्या अर्थ है? यीशु वहाँ पिता द्वारा अस्वीकार किए गए व्यक्ति के रूप में मर गए।

यह है कि जिस ईश्वर ने यीशु को जीवित किया, वही ईश्वर है जिसने उसे क्रूस पर चढ़ाया। इसका मतलब सिर्फ यह हो सकता है कि हमें यीशु के दुख में, क्रूस पर चढ़ने में ईश्वर को समझने की कोशिश करनी चाहिए। उनका कहना है कि बार्थ ने मसीह की पीड़ा में ईश्वर के बारे में बात करते हुए बहुत दूर तक नहीं गए।

मोल्टमैन के अनुसार बार्थ का विचार पर्याप्त रूप से त्रित्ववादी नहीं था। जब कोई व्यक्ति स्वयं ईश्वर के लिए यीशु की मृत्यु के महत्व पर विचार करता है, तो उसे ईश्वर के अंतर-त्रित्ववादी तनावों और संबंधों में प्रवेश करना चाहिए और पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बारे में बात करनी चाहिए। क्रूस केवल कुछ ऐसा नहीं है जो मनुष्य यीशु के साथ हुआ, बल्कि यह स्वयं ईश्वर के साथ हुआ।

क्रूस पर मसीह की घटना एक ईश्वरीय घटना है। इसलिए, क्रूस त्रिएक ईश्वर के रूप में ईश्वर का स्व-प्रकटीकरण है। वह पिता की मृत्यु का संकेत दिए बिना मसीह की मृत्यु के संदर्भ में ईश्वर की मृत्यु की बात करता है।

साथ ही, वह पात्रा के विचार को कायम रखता है, वह पिता की पीड़ा को अस्वीकार करता है, लेकिन वह पिता के साथ-साथ पिता द्वारा पीड़ित होने की पुष्टि करता है। मसीह ईश्वर का अभिशप्त है। क्रूस का धर्मशास्त्र इससे अधिक मौलिक रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता है जितना कि यहाँ है।

इसलिए, केवल एक ही निष्कर्ष संभव है। जर्गेन मोल्टमैन के हवाले से, बेटे के जुनून में, पिता खुद त्याग की पीड़ा झेलता है। बेटे की मृत्यु में, मृत्यु खुद भगवान पर आती है।

और पिता अपने पुत्र की मृत्यु को त्यागे हुए मनुष्य के प्रति प्रेम में, त्यागे हुए मनुष्य के प्रति अपने प्रेम में सहता है। इसलिए, क्रूस पर यीशु की मृत्यु में, मोल्टमैन का तर्क है, परमेश्वर ने इस दुनिया के सभी दुखों को अपने ऊपर ले लिया है। उनके हवाले से कहा गया है कि सारा मानव इतिहास, चाहे वह अपराध और मृत्यु से कितना भी निर्धारित क्यों न हो, परमेश्वर के इस इतिहास में समाहित है, अर्थात् त्रिदेव में, और परमेश्वर के इतिहास के भविष्य में एकीकृत है।

ऐसा कोई दुख नहीं है जो ईश्वर के इतिहास में ईश्वर का दुख न हो। कोई मृत्यु नहीं है जो गोलगोथा के इतिहास में ईश्वर की मृत्यु न रही हो। मोल्टमैन ने इसे कितनी गंभीरता से लिया है, यह इस तथ्य से पता चलता है कि इस संदर्भ में, उन्होंने ऑशविट्ज़ का जोरदार उल्लेख किया है।

यहाँ तक कि ऑशविट्ज़ को भी ईश्वर ने अपने इतिहास में शामिल कर लिया है। ईश्वर में विभाजन इतिहास के पूरे कोलाहल को अपने भीतर समेटे हुए है। और इसका मतलब है सभी के लिए सच्चा उद्धार, अगर, इसके लिए, इसका मतलब है सच्चा उद्धार।

क्योंकि अगर सारा मानव इतिहास, उसके दुख, अपराध और मृत्यु के साथ, ईश्वर के इस इतिहास में समाहित हो जाता है, तो यह ईश्वर के इतिहास के भविष्य में भी समाहित हो जाता है, यानी दुख, अपराध और मृत्यु पर ईश्वर की जीत। अगर यह सार्वभौमिकता पर लागू होता है, तो आप सही हैं। एक बार फिर, आधुनिक धर्मशास्त्रियों के चिंतन और धर्मशास्त्र का अंतिम परिणाम पूरी मानव जाति का देवत्विकरण है।

डच धर्मशास्त्री, इंजील धर्मशास्त्री क्लास रुइना ने मोल्टमैन के कार्यक्रम का मूल्यांकन किया है। उनकी पुस्तक दुख और मृत्यु की वास्तविकता को पूरी गंभीरता से लेती है। यह दुख और मृत्यु की

वास्तविकता को यीशु मसीह के क्रूस से और क्रूस को स्वयं ईश्वर के अस्तित्व के हृदय से जोड़कर ऐसा करती है।

इसका मतलब है कि वह क्रूस पर चढ़ा हुआ ईश्वर है, मोल्टमैन की पुस्तक के शीर्षक का हवाला देते हुए। और फिर भी, रुइना का कहना है कि इस बिंदु पर, हमारे सवालों की शुरुआत होनी चाहिए। नंबर एक, क्या क्रूस पर चढ़ाए गए ईश्वर का विचार वास्तव में शास्त्रों में है? इसलिए, लूथर यह कहने में संकोच नहीं करता कि ईश्वर मसीह में पीड़ित है, लेकिन क्या हम इससे आगे जा सकते हैं? लूथर ने हमेशा ऐसा करने से इनकार कर दिया।

उनके लिए, ईश्वर की पीड़ा एक अकल्पनीय रहस्य थी जिसे स्वर्गदूत भी पूरी तरह से नहीं समझ सकते थे। रुइना कहते हैं, मेरा मानना है कि लूथर इस मामले में सही थे। यह वह व्यक्ति यीशु है जो क्रूस पर लटका हुआ है और एक प्रतिनिधि के रूप में है जिसे उसके ईश्वर ने त्याग दिया था।

यह निश्चित रूप से मोल्टमैन की क्रॉस की व्याख्या से काफी अलग है, जिसमें उन्होंने खुद भगवान के भीतर एक घटना के रूप में क्रॉस की व्याख्या की है। रुइना की राय में, मोल्टमैन यहां शास्त्र की संयमित भाषा से परे जाते हैं, और परिणामस्वरूप क्रॉस का धर्मशास्त्र एक काल्पनिक निर्माण है जो महत्वपूर्ण बिंदुओं पर बाइबिल के केरीग्मा की तुलना में हेगेल से अधिक आत्मीयता दिखाता है। दूसरा, मोल्टमैन का क्रॉस पर लगभग अनन्य ध्यान पुनरुत्थान की कीमत पर नहीं है।

बेशक, दूसरा मुद्दा यह सवाल है कि क्या यह सच नहीं है कि मोल्टमैन का क्रूस पर ध्यान केंद्रित करना यीशु के पुनरुत्थान को कम करता है। उन्होंने अपने पहले प्रमुख कार्य, थियोलॉजी ऑफ़ होप में इसका खंडन नहीं किया। उन्होंने पुनरुत्थान पर बहुत ज़ोर दिया। लेकिन अब, उनकी पुस्तक, द क्रूसीफाइड गॉड में यह बिल्कुल विपरीत है।

पॉल कभी भी ईश्वर के बारे में ऐसा नहीं कहता कि वह यीशु के साथ क्रूस पर पीड़ित था, लेकिन बार-बार, वह ईश्वर के बारे में बोलता है; पॉल ईश्वर के बारे में ऐसा कहता है कि वह ईश्वर है जिसने यीशु को मृतकों में से जीवित किया। पुनरुत्थान न केवल क्रूस के छिपे हुए अर्थ की अभिव्यक्ति है, बल्कि यह उद्धार के इतिहास में अगला चरण है। क्रूस पर चढ़ाए गए ईश्वर पर मोल्टमैन का जोर एक वास्तविक समस्या को कम करके आंकता है: मसीह का पुनरुत्थान।

क्या हम वाकई ईश्वर में मृत्यु के बारे में बात कर सकते हैं, नंबर तीन? बाइबल में कहीं भी इन शब्दों में बात नहीं की गई है। इसी तरह का सवाल तब उठता है जब मोल्टमैन ईश्वर के इतिहास में सभी मानवीय दुखों और मृत्यु को शामिल करने की बात करते हैं। क्या यह दृष्टिकोण शास्त्र के बजाय हेगेलियन नहीं है?

पांचवां, मोल्टमैन का अगला दृष्टिकोण, पैननबर्ग की तरह ही, मनुष्य के एक युगांतिक और सार्वभौमिक दैवीकरण की ओर ले जाता है।

"मनुष्य बिना किसी सीमा और शर्त के परमेश्वर के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान में ले जाया जाता है, और विश्वास में परमेश्वर की पूर्णता में शारीरिक रूप से भाग लेता है। पिता के दुःख, पुत्र के प्रेम और आत्मा की प्रेरणा के बीच ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसे परमेश्वर की स्थिति से अलग कर

सके। मानव परमेश्वर जो क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह में एक मनुष्य का सामना करता है, इस प्रकार एक व्यक्ति को यथार्थवादी दिव्यीकरण में शामिल करता है।"

फिर से, कोई यह सोचने से नहीं बच सकता कि क्या यह बाइबिल के युगांतशास्त्र के बजाय हेगेलियन के अनुरूप नहीं है।

छठा, अंत में, सवाल यह है कि चाल्सीडॉन का क्या बचा है? यह उत्तर देने के लिए बहुत कठिन प्रश्न लगता है। मोल्टमैन चाल्सीडॉन से सहमत हैं कि यीशु बहुत ईश्वर और बहुत मनुष्य हैं। दूसरी ओर, दो प्रकृतियों का सिद्धांत वास्तव में उनकी पुस्तक, द क्रूसीफाइड गॉड में कोई भूमिका नहीं निभाता है। यहाँ जिस प्रश्न को टाला नहीं जा सकता है वह यह है कि क्या मोल्टमैन के क्रूसीफाइड ईश्वर पर जोर देने में, यीशु की मानवता को अभी भी गंभीरता से लिया जाता है।

मोल्टमैन के धर्मशास्त्र के बारे में वोल्फहार्ट पैननबर्ग की तुलना में कई और सवाल हैं। और इसलिए, हम कैथोलिक धर्मशास्त्र की ओर बढ़ते हैं। यह आश्चर्यजनक है कि वैकल्पिक क्राइस्टोलॉजी की खोज रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों हलकों में चल रही है।

हम उन्हें नए धर्मशास्त्री कहेंगे, वे सभी दो बातों पर सहमत हैं। सबसे पहले, हमें अपना आरंभिक बिंदु मनुष्य यीशु से लेना होगा। इसका मतलब है कि नीचे से क्राइस्टोलॉजी, जिसे हमने बार-बार देखा है, बहुत समस्याग्रस्त है।

दूसरा, खासकर अगर यह नीचे से एक पूर्ण क्राइस्टोलॉजी है, जो कि इनमें से अधिकांश धर्मशास्त्रियों में है। पैननबर्ग अपवाद है, नियम नहीं। दूसरा, हमें उसकी सच्ची मानवता को पूरी तरह से गंभीरता से लेना होगा।

खैर, हम करते हैं, लेकिन अगर हम बिल्कुल नीचे से शुरू करते हैं, तो क्या हम उसके देवता को गंभीरता से लेते हैं? क्या वह भगवान है? संभावित समस्याएँ जिनका मैंने अभी संकेत दिया है, वे दुर्भाग्य से एक अन्य प्रसिद्ध रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्री, हंस कुंग के लिए सच हैं, जो अब आधिकारिक रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्री नहीं हैं। रोम में उनके संघर्षों के परिणामस्वरूप उन्हें ट्यूबिंगन विश्वविद्यालय में रोमन कैथोलिक छात्रों के शिक्षक के रूप में बर्खास्त कर दिया गया, और उनका प्रभाव अभी भी काफी है, जिसमें प्रोटेस्टेंट मंडलियाँ भी शामिल हैं। सबसे पहले, वह एक ऐसी दुनिया में ईसाई धर्म का समर्थक बनना चाहता है जो धर्मनिरपेक्षता की बढ़ती प्रक्रिया में शामिल है।

हमें पुरानी मध्ययुगीन तस्वीर और दुनिया की तस्वीर को त्यागकर आधुनिक विज्ञान से उत्पन्न तस्वीर को स्वीकार करना चाहिए। कुंग एक नए प्रतिमान की मांग करते हैं। मसीह के सिद्धांत के परिणामों पर उन्होंने ईसाई होने और ईश्वर के अस्तित्व पर अपने पिछले दो प्रमुख कार्यों में विस्तार से चर्चा की है। दोनों कार्यों से, यह स्पष्ट है कि वह नीचे से एक क्राइस्टोलॉजी का विकल्प चुनता है, जो पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में यीशु मसीह से शुरू होता है।

एक स्पष्ट क्राइस्टोलॉजी यीशु के निहित क्राइस्टोलॉजिकल भाषण, कार्यों और पीड़ा से उभरती है। वास्तव में, हम कुंग के अनुसार, नए नियम में कई विविध क्राइस्टोलॉजीज़ को उभरते हुए देखते हैं। मेरा एक मित्र है जिसने ट्यूबिंगन कैथोलिक धर्मशास्त्र पर पीएचडी की है।

एक बार, वह जर्मनी में ट्यूबिंगन गए, और उन्होंने हंस कुंग और वाल्टर कैस्पर सहित रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्रियों का साक्षात्कार लिया। वह बहुत दुखी व्यक्ति के रूप में वापस आए। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा साक्षात्कार किया गया हर व्यक्ति, एक अपवाद को छोड़कर, रूढ़िवादी नहीं था।

उनमें से हर एक ने नीचे से, मनुष्य यीशु के साथ शुरुआत की, और ऐसा करके, आप ईश्वर के दूसरे व्यक्ति, ईश्वर पुत्र, नासरत के यीशु में मनुष्य बनने के साथ चाल्सेडोनियन या बाइबिल के क्राइस्टोलॉजी को प्राप्त नहीं कर सकते। एकमात्र अपवाद हंस कुंग नहीं, बल्कि वाल्टर कैस्पर थे, जो ईश्वर के पुत्र के अवतार में विश्वास करते थे। मेरे मित्र को इससे बहुत प्रोत्साहन मिला, लेकिन कुल मिलाकर वे उज्ज्वल, प्रसिद्ध, लेखन जर्मन धर्मशास्त्रियों से बहुत दुखी थे, जो वास्तव में रूढ़िवादी क्राइस्टोलॉजी में विश्वास नहीं करते थे।

कुंग का अपना दृष्टिकोण कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी का है, जो क्राइस्टोलॉजी के सार से अलग है। ईश्वर के साथ यीशु के रिश्ते को रहस्योद्घाटन की श्रेणियों में व्यक्त किया जाना चाहिए। यीशु ईश्वर का वचन और मानव रूप में इच्छा है।

नासरत का सच्चा मनुष्य यीशु, विश्वास के लिए, एकमात्र सच्चे परमेश्वर का वास्तविक रहस्योद्घाटन है। ये उद्घरण हैं। यीशु में, परमेश्वर हमें दिखाता है कि वह कौन है और हमें अपना चेहरा दिखाता है।

उसी यीशु में, इस अर्थ में, यीशु परमेश्वर की छवि, शब्द, पुत्र है। इसी संदर्भ में, पूर्व-अस्तित्व, जैसा कि मसीह को जिम्मेदार ठहराया गया है, इसका मतलब है कि वह हमेशा परमेश्वर के विचार में रहा है। यह बाइबिल का पूर्व-अस्तित्व नहीं है।

और परमेश्वर और यीशु के बीच का रिश्ता शुरू से ही अस्तित्व में था और इसकी नींव परमेश्वर में ही है। बाइबिल के पूर्व-अस्तित्व का अर्थ है कि मनुष्य, यीशु के होने से पहले, परमेश्वर का शाश्वत पुत्र था, जो हमेशा पिता और पवित्र आत्मा के साथ स्वर्ग में विद्यमान था। और यह दिव्य प्राणी अपनी दिव्यता को पूरी तरह से बनाए रखते हुए मनुष्य बन गया।

रूनिया लिखते हैं कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह वास्तव में एक कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी है। लेकिन क्या यह प्राचीन चर्च द्वारा निकेया, इफिसस और चाल्सेडन की परिषदों में स्वीकार की गई बातों से सहमत है? कुहन का मानना है कि इसका उत्तर सकारात्मक है। निश्चित रूप से, परिषदों ने खुद को एक ही पदार्थ के आध्यात्मिक शब्दों, होमोओसियोस में व्यक्त किया, लेकिन वे अन्यथा नहीं कर सकते थे क्योंकि कोई अन्य वैचारिक प्रणाली उपलब्ध नहीं है।

फिर भी वे जिस बात के लिए खड़े थे, सच्चे परमेश्वर और सच्चे मनुष्य, उसे हमारे दिनों में भी कायम रखा जाना चाहिए। “यह कि परमेश्वर और मनुष्य वास्तव में यीशु मसीह की कहानी में शामिल हैं, यह बात आज भी विश्वास के द्वारा दृढ़तापूर्वक कायम रखी जानी चाहिए।”

क्या वह भाषा एक सच्चे अवतार की मांग करती है? नहीं करती। वेयर डेयस, सच्चे ईश्वर की अवधारणा का कुह्न के लिए क्या अर्थ है? यहाँ जो कुछ भी वह कह रहा है, उसका पूरा बिंदु कुह्न का एक उद्धरण है, यीशु में और उसके साथ जो कुछ हुआ, उसका पूरा बिंदु इस तथ्य पर निर्भर करता है कि विश्वासियों के लिए, मनुष्य के मित्र के रूप में स्वयं ईश्वर उपस्थित था, कार्य कर रहा था, बोल रहा था, कार्य कर रहा था, और निश्चित रूप से इस यीशु में खुद को प्रकट कर रहा था, जो मनुष्यों के बीच ईश्वर के अधिवक्ता, प्रतिनिधि, प्रतिनिधि और प्रतिनिधि के रूप में आया था, और जिसे ईश्वर ने क्रूस पर चढ़ाए जाने और जीवन में वापस आने के रूप में पुष्टि की थी। ईश्वरीय पुत्रत्व, पूर्व-अस्तित्व, सृष्टि, उल्कापिंड और अवतार के बारे में सभी कथन, जो अक्सर उस समय के पौराणिक या अर्ध-पौराणिक रूपों में लिपटे होते हैं, अंततः उस आह्वान, प्रस्ताव और दावे की विशिष्टता, अद्वितीयता, अद्वितीयता, मेरे लिए नया शब्द और अद्वितीयता को प्रमाणित करने के अलावा और कुछ नहीं करते हैं, जो यीशु में और उसके साथ प्रकट हुआ, अंततः मानव का नहीं बल्कि ईश्वरीय मूल का, इसलिए बिल्कुल विश्वसनीय, मनुष्य की बिना शर्त भागीदारी की आवश्यकता है।

थके हुए होमो के बारे में, मसीह की सच्ची मानवता के बारे में, कुहन कहते हैं, यीशु पूरी तरह से और पूरी तरह से मनुष्य थे, मानव होने का एक मॉडल, मानव अस्तित्व के अंतिम मानक का प्रतिनिधित्व करते हैं। बेशक, वह ऐसा करता है। उनका मानना है कि इस तरह से, परिषदों द्वारा सिखाए गए सत्य से कुछ भी घटाया नहीं जाता है; यह केवल हमारे अपने समय के मानसिक माहौल में स्थानांतरित होता है।

लेकिन दुख की बात है कि इसका मूल्यांकन कुछ और ही दिखाता है। यह स्पष्ट रूप से एक क्राइस्टोलॉजी है जो पूरी तरह से, सापेक्ष रूप से नहीं, बल्कि पूरी तरह से नीचे से है। किसी भी स्तर पर अवतार के विचार को यीशु के वास्तविक स्वरूप के अंतिम कथन के रूप में नहीं देखा जाता है।

कुह्न एक कार्यात्मक कथन से आगे नहीं जा सकते। यीशु ईश्वर की शक्ति और बुद्धि का प्रकटीकरण है। शायद कोई यह कह सकता है कि कुह्न के क्राइस्टोलॉजी में, ऑन्टोलॉजिकल भाषा को कार्यात्मक बनाया गया है।

कुहन द्वारा लिखित ऑन बीइंग ए क्रिस्चियन की एक लंबी समीक्षा में, ब्रिटिश इंजीलवादी रिचर्ड बाउकॉम ने इसे एक तरह का भोला बाइबिलवाद कहा है। बाउकॉम इस बात से इनकार नहीं करते कि न्यू टेस्टामेंट क्राइस्टोलॉजिकल भाषा मुख्य रूप से, हालांकि पूरी तरह से नहीं, कार्यात्मक है। और वैसे, मैं इससे सहमत हूँ।

लेकिन इस कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी पर और अधिक चिंतन की आवश्यकता है। और एक बार जब इसके बारे में चिंतनशील प्रश्न पूछे जाते हैं, तो ऐसा लगता है कि इसे समर्थन देने के लिए एक आवश्यक क्राइस्टोलॉजी की आवश्यकता है। मैं दिल से सहमत हूँ।

लेकिन निश्चित रूप से, उस स्तर पर, एक भोले कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी में वापसी अब संभव नहीं है। कोई यह दिखावा नहीं कर सकता कि ये प्रश्न कभी नहीं पूछे गए। कुह्न केवल यह घोषित करके बच सकते हैं कि नए नियम में क्राइस्टोलॉजिकल चिंतन के परिपक्व फल, पूर्व-अस्तित्व, अवतार, मध्यस्थता और सृजन, विचार के पौराणिक तरीकों से संबंधित हैं जिन्हें त्याग दिया जाना चाहिए।

लेकिन क्या यह ऐसी सामग्री के साथ व्यवहार करने का अत्यधिक अवैज्ञानिक तरीका नहीं है जो किसी की पूर्वकल्पित योजना में फिट नहीं बैठती? यह देखना भी आश्चर्यजनक नहीं है कि कुह्न को अपने दृष्टिकोण को प्राचीन परिषदों के साथ, विशेष रूप से निकेया के सच्चे ईश्वर और सच्चे मनुष्य के कथनों के साथ सामंजस्य बिठाने में कठिनाई होती है। वास्तव में, वह जर्मन बिशप्स कॉन्फ्रेंस से बहुत नाराज दिखाई देता है जिसने उस पर निकेने पंथ के ईसाई धर्म संबंधी कथनों को नकारने का आरोप लगाया था। उनके लिए अच्छा है क्योंकि वह ऐसा करता है।

ओह, मेरी बात। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कुहन ने यीशु के बारे में कुछ महान, अद्भुत बातें कही हैं। लेकिन इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि ये कथन निकेया द्वारा कही गई बातों से कमतर हैं।

निकेया ने निस्संदेह यह भी माना कि यीशु ईश्वर का रहस्योद्घाटन था। लेकिन उसने आगे कहा कि वह ईश्वर का रहस्योद्घाटन है क्योंकि वह पिता के समान ही तत्व के एक ऑन्टोलॉजिकल अर्थ में ईश्वर का पुत्र है। कुहन ऐसा करने से इनकार करता है।

हंस कुहन ने यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है। इससे मुझे बहुत परेशानी होती है। मैं क्लास रूनिया का बहुत सम्मान करता हूँ। वह कहते हैं, मैं इस स्वीकारोक्ति का बहुत सम्मान करता हूँ जो दिल से आती है। यहाँ एक सच्चे विश्वास वाले व्यक्ति ने ऐसी भाषा में बात की है जो आत्मा को आकर्षित करती है। इसलिए, कोई भी इसका विश्लेषण और आलोचना करने में संकोच करता है।

लेकिन दिल से आने वाला सच्चा कबूलनामा भी विश्लेषण और आलोचना से परे नहीं है। और हमें कहना होगा, यह कबूलनामा रहस्योद्घाटन के स्तर से आगे नहीं जाता है। जबकि यह बिना किसी योग्यता के सच्चे पुरुषत्व की व्याख्या पवित्र और पूरी तरह से मनुष्य के रूप में करता है, सच्ची दिव्यता की व्याख्या उसी तरह से नहीं की जाती है जैसे पवित्र और पूरी तरह से ईश्वर की।

फिर भी यह निकेया की असली चिंता थी। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कुह्न भी त्रित्व की व्याख्या अनिवार्य रूप से करने के बजाय कार्यात्मक रूप से करते हैं। अंतिम विश्लेषण में, कुह्न इस कथन से आगे नहीं जा सकते कि पिता, पुत्र और आत्मा की एकता को एक रहस्योद्घाटन घटना और रहस्योद्घाटन एकता के रूप में समझा जाना चाहिए।

यह एक महत्वपूर्ण कथन है, लेकिन हम यह भी देखते हैं कि यह एक आवश्यक एकता के बजाय एक आर्थिक एकता की बात करता है। कुल मिलाकर, ट्यूबिंगन में कुह्न का साक्षात्कार करने में मेरे मित्र की उदासी की पुष्टि होती है। उनका क्राइस्टोलॉजी बाइबिल और इसलिए, चाल्सेडोनियन क्राइस्टोलॉजी से कम है।

कार्ल रेनर एक बहुत ही महत्वपूर्ण रोमन कैथोलिक व्यक्ति हैं। वे बालथासर, कुह्न और राहनर के साथ 20वीं सदी के उत्तरार्ध के अग्रणी और सबसे प्रभावशाली कैथोलिक धर्मशास्त्रियों में से एक हैं। मैं कहूंगा कि कार्ल राहनर सबसे महत्वपूर्ण हैं।

वे 1962-65 में वेटिकन II पर एक प्रभावशाली प्रभाव थे। वे 1967-71 तक मुंस्टर में प्रोफेसर थे। ईश्वरीय अनुग्रह के मामले में, उन्होंने हेनरी डी ल्यूबैक का अनुसरण करते हुए अनुग्रह को अलौकिक और मानव होने का हिस्सा माना।

फिर भी अनुग्रह मुफ्त और निःशुल्क भी है। इतिहास में यीशु की सेवकाई में शक्तिशाली कार्य, चिह्न और चमत्कार शामिल थे। लेकिन यीशु इससे कहीं बढ़कर थे।

वह एक अद्वितीय मिशन वाले एक युगांतशास्त्रीय भविष्यवक्ता थे। रेनर ने डोसेटिज्म पर जोरदार हमला किया, यह विचार कि यीशु पूरी तरह से मानव नहीं थे। उनका मुख्य तर्क ट्रान्सेंडेंटल दर्शन के ढांचे के भीतर एक चाल्सेडोनियन क्राइस्टोलॉजी को बनाए रखना था।

बुल्टमैन के विपरीत, उन्होंने तर्क दिया कि ऑन्टोलॉजिकल, यानी मसीह स्वयं में क्या है, ईश्वर-मनुष्य, अस्तित्ववादी की नींव है, यानी मसीह हमारे लिए क्या मायने रखता है। राहनर ने लिखा कि हम ईश्वर की निकटता किसी और जगह नहीं बल्कि नासरत के यीशु में पाएंगे। उन्होंने तर्क दिया कि प्रायश्चित्त न केवल प्रायश्चित्त लाता है बल्कि दुनिया के साथ ईश्वर की भागीदारी भी लाता है।

मैं उनके बारे में सिर्फ दो अन्य बातें बताना चाहता हूँ क्योंकि वे इनके लिए प्रसिद्ध हैं। उनका प्रसिद्ध कथन है कि आर्थिक त्रिमूर्ति आसन्न त्रिमूर्ति है, और आसन्न त्रिमूर्ति आर्थिक त्रिमूर्ति है। दूसरे शब्दों में, त्रिमूर्ति, कार्यात्मक त्रिमूर्ति, बाइबल में गति में प्रकट त्रिमूर्ति, वह है जो अपने अदृश्य सार में त्रिमूर्ति है।

हमारे उद्धार में यीशु मसीह पुत्र और पवित्र आत्मा की आर्थिक विशिष्टता वास्तविक पूर्ववर्ती शाश्वत भेदों को दर्शाती है। मैं इसका उल्लेख सिर्फ इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण है। रॉबर्ट लेथम ने अपने व्यवस्थित धर्मशास्त्र में कहा है कि रेनर के स्वयंसिद्ध के वैध और अमान्य दोनों उपयोग हैं।

सकारात्मक रूप से, यह संकेत दे सकता है कि ईश्वर स्वयं को इतिहास में प्रकट करता है जैसा कि वह अनंत काल में स्वयं में है। इस अर्थ में, आर्थिक त्रिमूर्ति आसन्न त्रिमूर्ति से जरा भी भिन्न नहीं है। केवल एक ही त्रिमूर्ति है।

त्रिएक परमेश्वर स्वयं को प्रकट करता है और ऐसा करके, स्वयं को प्रकट करता है। वह विश्वासयोग्य है। हम इस बात पर भरोसा कर सकते हैं कि उसका प्रकटीकरण उसके शाश्वत स्वरूप के प्रति सच्चा होगा।

फिर भी, इस स्वयंसिद्ध का सबसे अधिक बार उपयोग, आसन्न त्रिमूर्ति आर्थिक त्रिमूर्ति है, और आर्थिक त्रिमूर्ति आसन्न त्रिमूर्ति है, सामाजिक त्रिमूर्तिवादियों द्वारा किया गया है, जो आसन्न त्रिमूर्ति को पूरी तरह से समाप्त कर देता है। इस विचारधारा में, अर्थव्यवस्था ही सब कुछ है, जो प्रक्रिया धर्मशास्त्र के पैनेथिज्म से जुड़ा हुआ है। पैनेथिज्म कहता है कि ईश्वर ही सब कुछ है और सब कुछ ईश्वर है।

पैनेथिज्म, ग्रीक शब्द एन के साथ, जिसका अर्थ है, बीच में अटका हुआ है, इसका मतलब है कि ईश्वर सब कुछ नहीं है, लेकिन वह हर चीज में है। ऐसी सोच के लिए, आर्थिक त्रिमूर्ति आसन्न त्रिमूर्ति है, क्योंकि इसके अलावा और कुछ नहीं है। क्योंकि सब कुछ इतिहास द्वारा शासित है।

उन्हें तर्क देने दें, मोल्टमैन, पैनेनबर्ग, कैथरीन, लैकुना और रॉबर्ट जेन्सेन इस श्रेणी में आते हैं। जब कोई व्यक्ति त्रिदेव को मानव परिवार के समान समुदाय के रूप में चित्रित करता है, जैसा कि सामाजिक त्रिदेववाद करता है, तो त्रिदेववाद की अदृश्यता, अविभाज्यता सबसे अच्छी तरह से खतरे में पड़ जाती है, और त्रिदेववाद के लिए द्वार खुल जाता है। बस इतना ही कहना चाहता हूँ, शायद दर्शकों को अपने आप पर और अधिक अध्ययन करने के लिए प्रेरित करने के लिए।

दूसरी बात यह है कि पिछली सदी के मध्य से रोम स्पष्ट रूप से समावेशी स्थिति में चला गया है। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान ही उद्धार का एकमात्र तरीका है, लेकिन कोई भी व्यक्ति यीशु और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से बिना उसका नाम सुने या इस जीवन में सुसमाचार पर विश्वास किए बच सकता है। कार्ल रेनर ने 1961 में एक व्याख्यान में, गुमनाम ईसाई वाक्यांश पेश किया।

उन्होंने लिखा कि चर्च का विरोध करने वाले अन्य लोग केवल वे हैं जिन्होंने अभी तक यह नहीं पहचाना है कि वे वास्तव में पहले से ही हैं या हो सकते हैं, भले ही अस्तित्व की सतह पर वे विरोध में हों, वे पहले से ही गुमनाम ईसाई हैं। वास्तव में, ईसाई, फिर से उद्धृत करते हुए, राहनर को उद्धृत करते हुए, गुमनाम ईसाई धर्म की इस धारणा को त्याग नहीं सकते। इससे सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता पैदा होनी चाहिए, और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, वेटिकन II पर उनके शक्तिशाली प्रभाव के कारण, कि उन्होंने भी कुछ इसी तरह की पुष्टि की, और अब रोम खुलापन रखता है, न केवल प्रोटेस्टेंट को मसीह में अलग-अलग भाई-बहनों के रूप में स्वीकार करता है, बल्कि अब दुनिया के धर्मों के अनुयायियों को गुमनाम ईसाई के रूप में स्वीकार करता है, और उन सभी के उद्धार की आशा करता है।

मैंने पहले जेएटी रॉबिन्सन का जिक्र किया था। वह, मोल्टमैन की तरह, एक कार्यात्मक दृष्टिकोण का विकल्प चुनते हैं। उनके पास एक व्यक्ति में एकीकृत दो प्रकृतियों के सिद्धांत के लिए कोई जगह नहीं है।

एक व्यक्ति यीशु के बारे में दो तरह की भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए। वह निश्चित रूप से अपनी पुस्तक, अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक में कार्यात्मक क्राइस्टोलॉजी से आगे नहीं जाना चाहता। मेरी मदद करें, पुस्तक का नाम क्या है? ईश्वर की कसम।

हाँ, उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक, ऑनेस्ट टू गॉड में। क्षमा करें। दिन के अंत में, हालाँकि वह एंग्लिकन चर्च में एक बिशप था, दिन के अंत में, यीशु हमसे केवल डिग्री में भिन्न है, सार में नहीं।

एक बार फिर, एक बार फिर, नीचे से एक पूर्ण और सुसंगत क्राइस्टोलॉजी। प्रोसेस थियोलॉजी का क्राइस्टोलॉजी। प्रोसेस थियोलॉजी, अल्बर्ट नॉर्थ व्हाइटहेड और चार्ल्स हार्टशोर्न के दर्शन से अपना संकेत लेते हुए, ईश्वर की सर्वेश्वरवादी अवधारणा की धारणा पर आगे बढ़ता है।

उद्धरण, ईश्वर पूरी सृष्टि में, अस्तित्व के हर स्तर पर कार्यरत है। वह इसके माध्यम से चलता है, इस पर काम करता है, इसमें अपनी सद्भावना पूरी करता है। फिर भी ईश्वर सृष्टि के समान नहीं है।

वह इससे परे भी है। वह निस्संदेह संसार में है, लेकिन यह भी सच है कि संसार उसमें है। संसार ईश्वर में है।

वह एक अखंड और अखंड वास्तविकता है जो सभी चीजों के माध्यम से काम करता है, फिर भी हमेशा खुद ही रहता है। जबकि पारंपरिक ईसाई रूढ़िवाद ने कहा कि ईश्वर था, जिसने फिर दुनिया को कुछ भी नहीं से बनाया, दुनिया पहले अस्तित्व में नहीं थी, प्रक्रिया धर्मशास्त्र कहता है कि ईश्वर और दुनिया परस्पर अस्तित्व में हैं, और ईश्वर को दुनिया की जरूरत है, जैसे कि दुनिया को ईश्वर की जरूरत है। कुछ प्रक्रिया क्रिस्टोलॉजीज हैं, लेकिन नॉर्मन पिटेंजर उनमें से एक हैं जिन्होंने हमें वह चीज दी है।

वे कहते हैं कि ईसा मसीह ईश्वर की सर्वव्यापी और सार्वभौमिक गतिविधि का केंद्र हैं। वे क्रियाशील ईश्वर के मनुष्य की केंद्रीय अभिव्यक्ति हैं। एक वास्तविक अवतार के विचार को अविश्वसनीय और असंभव मानते हुए, वे इस विचार को चुनते हैं कि ईसा में, ईश्वरीय और मानवीय के पारस्परिक अंतर्संबंध द्वारा ईश्वर का ऊर्जामय और अन्तर्निहित होना एक चरम अवस्था तक पहुँच जाता है।

पिटेंजर की एक परिपक्व पुस्तक है क्राइस्टोलॉजी रीकंसिडर्ड 1970। वह पहले ही अध्याय में तीन बिंदु देते हैं। किसी तरह, हम यीशु मसीह की घटना में ईश्वर से मिलते हैं।

दूसरा, ईश्वर इस प्रकार एक वास्तविक, ऐतिहासिक रूप से वातानुकूलित और पूरी तरह से मानवीय प्राणी में मिलते हैं।

तीसरा, ईश्वर और यह मनुष्य एक दूसरे के साथ सबसे पूर्ण अंतर्संबंध के तरीके से संबंध में हैं। पिटेंजर के लिए, यीशु में ईश्वर की गतिविधि और अन्य लोगों के मामलों में ईश्वर की गतिविधि के बीच का अंतर प्रकार के बजाय डिग्री में अंतर है।

निश्चित रूप से, यह नीचे से एक क्राइस्टोलॉजी है जो अवतार, मसीह के देवता, और इसलिए, एक ईसाई प्रायश्चित और इसी तरह से इनकार करता है। मैं आधुनिक क्राइस्टोलॉजी के हमारे सर्वेक्षण को ईश्वर के अवतार के मिथक के बारे में बहस के साथ समाप्त करना चाहूंगा। 1970 के दशक के उत्तरार्ध में, यूनाइटेड किंगडम में अवतार पर एक बहस हुई।

*द मिथ ऑफ गॉड इन्कार्नेट* नामक पुस्तक के प्रकाशन से हुई। इस पुस्तक ने अपने उत्तेजक शीर्षक के कारण काफी हलचल मचाई, और फिर भी इसने कुछ नया नहीं दिया, लेकिन इसने इसे लोकप्रिय बना दिया। उसी वर्ष, माइकल ग्रीन द्वारा संपादित *द ट्रुथ ऑफ गॉड इन्कार्नेट* नामक छोटी सी पुस्तक में कई इंजील धर्मशास्त्रियों द्वारा उत्तर दिया गया।

*द मिथ ऑफ गॉड इन्कार्नेट* नामक पुस्तक क्यों लिखी? उन सभी का मानना है कि अवतार के सिद्धांत को जब तथ्यात्मक सत्य के विवरण के रूप में लिया जाता है, तो वह अब समझ में नहीं आता। उनका तर्क है कि यीशु, जैसा कि प्रेरितों के काम 2:21 में प्रस्तुत किया गया है, ईश्वर द्वारा ईश्वरीय उद्देश्य के भीतर एक विशेष भूमिका के लिए नियुक्त किया गया एक व्यक्ति था, और उसके बाद ईश्वर के अवतार, पवित्र त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति, एक मानव जीवन जीने की अवधारणा पौराणिक या काव्यात्मक है, और हमारे लिए उसके महत्व को व्यक्त करने का एक तरीका है। फ्रांसिस यंग का तर्क है कि क्राइस्टोलॉजिकल शीर्षक आसपास की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से निकले थे और शुरुआती ईसाइयों द्वारा यीशु के प्रति अपनी आस्था की प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किए गए थे।

एक अन्य योगदानकर्ता माइकल गोल्डर हैं। ये सम्मानित ब्रिटिश विद्वान हैं। पुस्तक के दूसरे भाग में, लेस्ली होल्डन और डॉन क्यूपिड ने निकेया और चाल्सेडन की ओर ले जाने वाले सैद्धांतिक विकास पर चर्चा की है।

क्ले रूनिया हमारे लिए मूल्यांकन करती है। खैर, मुझे पहले इस निकेया और चाल्सीडॉन मामले का सारांश देना चाहिए क्योंकि हमने इस पर बहुत समय बिताया है। होल्डन और क्यूपिड, दोनों ही ईश्वर के अवतार के मिथक के योगदानकर्ता के रूप में, निकेया से चाल्सीडॉन तक के इस विकास को ऐतिहासिक यीशु के बारे में नए नियम द्वारा बताई गई बातों से विचलन के रूप में अस्वीकार करते हैं।

होल्डन अनुभवात्मक भाषा के बीच अंतर करते हैं, जो प्रेरणा के बढ़ते झरने का वर्णन करने की कोशिश करती है, और पंथ भाषा, जो इस झरने को विचार के नियंत्रित प्रवाह में बदल देती है। मौरिस विल्स धर्मशास्त्र में मिथक लिखते हैं, और संपादकों में से एक जॉन हिक तर्क देते हैं कि अवतार का सिद्धांत, जब शाब्दिक रूप से लिया जाता है, तो हानिकारक है क्योंकि इसका तात्पर्य है कि ईश्वर को केवल यीशु के माध्यम से ही पर्याप्त रूप से जाना और प्रतिक्रिया दी जा सकती है। और मानव जाति का पूरा धर्म, यहूदी-ईसाई धर्म की धारा से परे, इस प्रकार, निहितार्थ से, मोक्ष के क्षेत्र से बाहर होने के कारण बहिष्कृत है।

रूनिया का मूल्यांकन, नंबर एक, इन लेखकों के अनुसार, अवतार के सिद्धांत को पूरी तरह से नकार दिया जाना चाहिए। नंबर दो, हालाँकि पुस्तक के शीर्षक में मिथक शब्द का इस्तेमाल

किया गया है, लेकिन इसके सटीक अर्थ के बारे में लेखकों के बीच कोई एकमत नहीं है।

तीन, लेखक आम तौर पर नए नियम के लेखन की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बारे में गहरा और अनुचित संदेह दिखाते हैं।

खैर, यह समझ में आता है क्योंकि नया नियम ईश्वर के अवतार की सच्चाई सिखाता है, जैसा कि जवाब देने वाली किताब में कहा गया है। यह और भी चौंकाने वाली बात है कि यीशु का पुनरुत्थान, जो नए नियम में एक बड़ी भूमिका निभाता है, ईश्वर के अवतार की मिथक में शायद ही कोई भूमिका निभाता है। यह खंड यीशु के उद्धार संबंधी महत्व के बारे में भी पूरी तरह से चुप है।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यदि अवतार एक मिथक है, तो यीशु हमें नहीं बचा सकते। एक साधारण मनुष्य, चाहे वह कितना भी महान या अद्भुत या शक्तिशाली या ईश्वर द्वारा वासित या ईश्वर द्वारा सशक्त क्यों न हो, हमें नहीं बचा सकता।

केवल भगवान ही हमें बचा सकते हैं। पुस्तक में पाप और अपराध का शायद ही कोई उल्लेख किया गया है। फिर से, मुझे आश्चर्य नहीं हुआ।

कुछ लेखकों ने तो यहाँ तक कहा कि नया नियम अवतार की शिक्षा देता है, लेकिन लेखक अभी भी दार्शनिक आधार पर इसे स्वीकार नहीं कर सकते। सभी लेखक स्वीकार करते हैं कि यीशु एक बहुत ही खास व्यक्ति हैं और वे उनके लिए अपरिहार्य हैं। कभी-कभी, वे उनके बारे में प्रशंसात्मक शब्दों में बात करते हैं, और फिर भी वे ईश्वर के अवतार की सच्चाई को अस्वीकार करते हैं, जैसा कि प्रतिक्रिया खंड में इंजील लेखकों द्वारा पुष्टि की गई है, जो ब्रिटिश जनता के बीच उदार और आलोचनात्मक विचारों के लोकप्रियकरण से स्पष्ट रूप से परेशान थे, जिसने कई लोगों के विश्वास को परेशान किया।

ये बातें इस तरह से साझा की गईं कि, यदि आप एक विचारशील व्यक्ति हैं, तो आप निश्चित रूप से यीशु के बारे में उन पुरानी मिथकों को अस्वीकार कर देंगे, इस तरह की बातें। जैसा कि पैट्रिस्टिक और आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, मसीह के ऐतिहासिक धर्मशास्त्रों और पैट्रिस्टिक और आधुनिक क्राइस्टोलॉजी के हमारे सर्वेक्षण का समापन हो रहा है, मैं बस यह बताना चाहता हूँ कि हम भविष्य के व्याख्यानों में कहाँ जाएँगे। हम व्यवस्थित धर्मशास्त्र को बाइबिल के पाठ के साथ जोड़ेंगे, इसे बाइबिल के पाठ से निकालेंगे।

और इस प्रकार, मसीह के ईश्वरत्व के लिए, हम यूहन्ना 1:1 से 18 के साथ बड़े पैमाने पर काम करेंगे। मसीह की मानवता के लिए, हम कुलुसियों 1:15 से 20 के साथ काम करेंगे, जो मसीह के ईश्वरत्व को दिखाने के लिए भी एक अच्छी जगह है। हम मसीह की दो अवस्थाओं, फिलिप्पियों 2:5 से 11, और अधिक के साथ काम करेंगे।

हम पूर्व-अस्तित्व, उसके व्यक्तित्व की एकता और गुणों के संचार पर भी चर्चा करेंगे, और मैं अपने अगले व्याख्यान से शुरू करते हुए उन चीजों को एक साथ साझा करने के लिए उत्सुक हूँ। इन मामलों में आपकी रुचि के लिए फिर से धन्यवाद। यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन और क्राइस्टोलॉजी

पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 8, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 3,  
जुर्गन मोल्टमैन , कैथोलिक और प्रोसेसथियोलॉजी है ।